छटके रामत मेली, वालाजी संघाते गेहेली।
आलिंघण लिए तेली, चुमन दिए पिउ पेहेली, मुख आस पास।। १३ ।।

दीवानी श्री इन्द्रावतीजी खेल में वालाजी को छोड़ती हैं, फिर मिलती हैं, कोली भर लेती हैं, फिर छोड़ देती हैं। पहले चुम्बन देती हैं, फिर प्रियतम के मुख को इधर-उधर से चूमती हैं।

सर्वे जोवंता सुंदरी, रामत तो घणी करी।
पिउ कंठे बांहो धरी, इंद्रावती वाले वरी, जोइए कोण मुकावे हाथ।। १४ ।।

सब सखियों के देखते हुए भी श्री इन्द्रावतीजी ने बहुत रामतें कीं। वह वालाजी के गले में हाथ डालकर कहती हैं कि मैंने वालाजी को अपना बना लिया है। देखती हूं अब कौन सखी हमारा हाथ छुड़ाती है?

॥ प्रकरण ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ ७४६ ॥

केसरबाईनो झगडो

आवी केसरबाई कहे रे बेहेनी, सुणो वात कहूं तमसूं।
भली रामत वालासूं रंगे करी, हवे मूको रमे अमसूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के (प्रेम भरे अधिकार) की बात को सुनकर केसरबाई सखी आकर कहती है, हे बहन! तुमसे एक बात कहती हूं। तुमने बहुत रंगभरी रामतें वालाजी के साथ की हैं। अब वालाजी को छोड़ो, मैं खेलूंगी।

हूं तो नहीं रे मूकूं मारो नाहोजी, तमे जोर करो जथाबल।
आवी वलगो वालाजीने हाथ, आतां देखे छे सैयर साथ।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं अपने वालाजी को नहीं छोड़ूंगी। तुम अपनी शक्ति आजमा लो। वालाजी को जरा हाथ तो लगाओ। सब सखियां देख रही हैं।

इंद्रावती कहे अमसूं रमतां, केसरबाई करो एम कांए।
तमे हाथ आवी वालाजीने वलगो, पण हूं नव मूकूं बांहें।। ३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे केसरबाई! मेरे रस में तुम ऐसे क्यों विघ्न करती हो। तुम आकर वालाजी के हाथ को पकड़ो, लेकिन मैं इनकी बांहें नहीं छोड़ूंगी।

हूं कंठ बांहोंडी वालीने ऊभी, मारो प्राणतणो ए नाथ।
नेहेचे सखी हूं नही रे मूकूं, तमे कां करो वलगती वात।। ४ ।।

मैं वालाजी के गले में हाथ डाले खड़ी हूं। यह मेरे प्राणनाथ हैं। यह निश्चित है कि मैं नहीं छोड़ूंगी। तुम व्यर्थ में क्यों झगड़ती हो?

अनेक प्रकार करो रे बेहेनी, हूं नहीं मूकूं प्राणनो नाथ।
बीजी रामत जई करो रे बेहेनी, आतां ऊभो छे एवडो साथ।। ५ ।।

हे केसरबाई! तुम कुछ भी कर लो मैं अपने प्राणनाथ को नहीं छोड़ूंगी। तुम जाकर और खेल खेलो। यह सब सुन्दरसाथ खड़े हैं। (इनमें से किसी के साथ खेल लो)।

केम रे मूकूं कहे केसरबाई, तमने रमतां थई घणी वार।
हवे तमे केम नहीं मूको, मारा प्राणतणो आधार।। ६ ।।

केसरबाई कहती हैं, भला कैसे नहीं छोड़ोगी? तुम्हें वालाजी के साथ खेलते हुए बहुत देर हो गई है। अब तुम हमारे प्राणवल्लभ को भला क्यों नहीं छोड़ोगी?

Nijanand App

सुणो केसरबाई वात अमारी, इंद्रावती कहे आ वार।
लाख वातो जो करो रे बेहेनी, पण हूं नहीं मूकूं निरधार।।७।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे केसरबाई! इस बार हमारी बात सुनो। तुम लाख उपाय कर लो। मैं तो भी निश्चय करके नहीं छोड़ूंगी।

कहे केसरबाई अमसूं इंद्रावती, कां करो एवडूं बल।
एटला लगे तमे रामत कीधी, हवे नहीं मूकूं पाणीवल।।८।।

केसरबाई कहती हैं, हे श्री इन्द्रावतीजी! मेरे साथ जोर आजमाइश क्यों करती हो? इतनी देर से तुम रामत कर रही हो। मैं अब पलभर के लिए नहीं छोड़ूंगी।

बीजी सखी इहां नहीं रे बापडी, आंही तो इंद्रावती नार।
जोर करो जोइए केटलूं केसरबाई, केम ने मुकावो आधार।।९।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं इन्द्रावती हूं। कोई कमजोर सखी नहीं हूं। हे केसरबाई! देखती हूं, तुम कितना जोर लगाती हो और कैसे हमारे धनी को छुड़ाती हो?

एटला दिवस थया अमने रमतां, पण कोणे न कीधूं एम।
भोला ढालनी वात जुई छे, जोइए जोर करी जीतो केम।।१०।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इतना समय मुझे खेलते हुए हो गया, पर किसी ने ऐसा नहीं किया। भोलेपन की बात अलग है। देखती हूं ताकत लगाकर कैसे जीतती हो?

वेढ देखीने वालोजी हँसिया, वलगे मांहोंमांहें नार।
कोई केने नमी न दिए, आतां बंने जाणे झुंझार।।११।।

वालाजी को दोनों की जिद देखकर हंसी आ गई कि यह दोनों आपस में कैसे लड़ रही हैं। दोनों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं है। यह तो दोनों ही अपने को जोरावर (शक्तिशाली) समझती हैं।

सिखामण दिए रे वालोजी, कोई न नमे रे लगार।
त्यारे रूप कीधां रंगे रमवा, संतोखी सर्वे नार।।१२।।

वालाजी समझाते हैं। फिर भी दोनों में से कोई जरा भी नहीं झुकतीं। तब वालाजी ने रामत को आनन्दमय बनाने के लिए, अपने अनेक रूप बना लिए, इससे सब सखियां सन्तुष्ट हो गईं।

केसरबाई जाणे अमकने आव्या, इंद्रावती जाणे अमपास।
सघलीसूं सनेह करी, वन मांहें कीधां विलास।।१३।।

केसरबाई ने समझा कि वालाजी मेरे पास आ गए हैं। श्री इन्द्रावतीजी जानती हैं कि वह मेरे पास हैं। वालाजी ने सबसे प्यार कर वन में आनन्द लिया।

इंद्रावती केसरबाई मलियो, बंने कहे एम।
ओसियाली थैयो मन मांहें, जुओ आपण कीधूं छे केम।।१४।।

श्री इन्द्रावतीजी और केसरबाई दोनों जब बाद में मिलीं, तो मन में शर्मिन्दा होकर कहने लगीं, देखो हमने ऐसा क्यों किया?

Nijanand App

भीडीने मलियो बंने उछरंगे, भाजी हैडानी हाम।
इंद्रावती कहे केसरबाई, वाले पूरण कीधां मन काम।। १५ ।।

बड़े हर्ष के साथ दोनों गले लगकर मिलीं और मन के मैल को दूर किया। अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे केसरबाई! वालाजी ने हमारी मनोकामनाएं पूरी की हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३९ ॥ चौपाई ॥ ७६१ ॥

राग केदारो छंद

छेडो न छटके, अंग न अटके, भरे पांउं चटके, मानवंती मटके।। १ ।।

रास रामत में साड़ी का पल्ला कहीं खुल न जाए। कोई अंग अटक न जाए। पांव से चटकनी चाल से चलकर मानवन्ती (मानिनी) सखियां मटक-मटक कर रास खेलती हैं।

लिए रंग लटके, घुटावे अधुर घटके, वली वली सटके।
खांत घणी खटके, रमवा रंगे रास री।। २ ।।

लटक के साथ आनन्द करती हैं। अधर का रस पिलाती हैं। बार-बार खिसक जाती हैं। बड़ी प्रबल चाह रास खेलने की होती जाती है।

रमती रास कामनी, जामती चंद्र जामनी।
मली वल्लभे माननी, भलंती रंगे भामनी।। ३ ।।

कामिनी सखियां रास खेलती हैं। चन्द्रमा की चांदनी रात स्थिर हो जाती है और मानिनी सखियां प्रियतम से मिलती हैं तथा आपस में एक-दूसरे से मिलती हैं।

स्यामाजी संगे स्यामनी, बांहोंडी कण्ठे कामनी।
ताणती अंगे आमनी, मुख बीडी सोहे पाननी।
एम रमत सकल साथ री।। ४ ।।

श्यामाजी श्री श्याम के गले में हाथ डालकर अपनी तरफ खींचती हैं। मुख में पान का बीड़ा है। इस तरह से सब सखियां खेल रही हैं।

मारो साथ रमे रे सोहामणो, कांई रामत रमे रंग।
वालाजीसुं वातो, करे अख्यातो, उलट भीडे अंग।। ५ ।।

सब सखियां बड़े आनन्द के साथ सुहावने ढंग से रामत खेल रही हैं। वालाजी से बेशुमार बातें करती हैं और अंग में उमंग भरकर वालाजी से चिपट जाती हैं।

बांहोडी वाले भूखण संभाले, रखे खूंचे कोई नंग।
लिए बाथो वालाजी संघातो, उनमद बल अनंग।। ६ ।।

अपने आभूषण संभाल कर वालाजी के गले में बांह डाले हैं, ताकि कोई नग चुभ न जाए। वालाजी के साथ मस्ती तथा उन्मद अंगों से कोहली भरती हैं।

छटके रमे पाखल भमे, रामत न करे भंग।
छेलाइए छेके अंग वसेके, सखी सर्वे सुचंग।। ७ ।।

फिर अलग होकर भमरी फिरती हैं तो भी खेल में कोई रुकावट नहीं आती है। सब सखियां सावधान हैं–विशेषकर चतुराई के साथ कूदने में।

Nijanand App